"सामाजिक शोषण"

क्यों जन्मा ये शोषक वर्ग
समाज में ,

पनप रहा आज भी इंसान की
आवाज में।

समाज में बनाया क्यों शोषक वर्ग को ,

आज भी बोलबाला है यहां शोषक वर्ग
का।

न जाने कितनी जानें गईं शोषित वर्ग
की ,

लहू से रंगे है कर शोषक वर्ग के ।

आज भी क्यों एहसास नहीं है ,

क्या जन जन का इतिहास नहीं ये?

बहुत हो गया क्या सहते जाओगे?

इतिहास को क्या दोहराते जाओगे?

रखो आत्मबल मिल जाओ मेरी
आवाज में,

क्या है नहीं दम मेरे जज्बात में?

तोड़ दिया था शोषण ने मेरी
आवाज को,

क्या तोड़ पाए वह मेरे विश्वास
को?

गवाह बन चुका है मेरा इतिहास,

है उठी आज मेरी आवाज।

ना बुझने दिया मैंने दिया आशा का,

आज भी है रोशन सवेरा उम्मीद का।

उठ रहा है प्रश्न मेरे आह्वान में,

क्यों पनप रहा आज यह इंसान की
आवाज में?

सत्य है जन्म लेने वाले का भी अंत
होता है,

पता नहीं क्यों अमर बन बैठा है यह
समाज में।

पूजा अग्रवाल

साहित्य रत्न जुलाई2023